Contents

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की धार्मिक पृष्ठभूमि

कुमारिल भट्टाचार्य का योगदान 19

शंकराचार्य का योगदान 20

१. **प्रमुख वैष्णवचार्यों का संक्षिप्त परिचय :** 22

(१) रामानुजाचार्य	–	विशिष्टाद्वैत वाद	–	श्री सम्प्रदाय	22
(२) निम्बार्काचार्य	–	द्वैताद्वैत वाद (भेदा–भेद वाद)	–	सनकादि सम्प्रदाय	23
(३) विष्णुस्वामी	–	शुद्धाद्वैत वाद	–	रुद्र सम्प्रदाय	24
(४) माधवाचार्य	–	द्वैत वाद	–	ब्रह्म सम्प्रदाय	26

२. **प्रमुख वैष्णव सम्प्रदायों का संक्षिप्त परचिय :** 26

(१) रामानंद	–	विशिष्टा द्वैत वाद	–	रामानंदी सम्प्रदाय	26
(२) चैतन्य महाप्रभु	–	अचिन्त्य भेदा भेद वाद	–	चैतन्य सम्प्रदाय	27
(३) हरिदास	–	–	–	सखी सम्प्रदाय	28
(४) हित हरिवंश	–	–	–	राधा–वल्लभ सम्प्रदाय	29
(५) वल्लभाचार्य	–	शुद्धाद्वैत वाद	–	वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग)	30

वल्लभाचार्य : वंश, जन्म, शिक्षा, यात्राएँ, श्री नाथजी की सेवा, गृहस्थाश्रम व संतति, तिरोधान, शिष्य सेवक, बैठकें, ग्रंन्थ–रचना, वल्लभाचार्य की सामाजिक देन

द्वितीय अध्याय : पुष्टिमार्ग का विस्तृत परिचय 39

१. पुष्टिमार्ग की स्थापना व व्याख्या : 39

(१) पुष्टिमार्ग की स्थापना 39

(२) पुष्टिमार्ग की परिभाषाएँ 40

(३) वल्लभाचार्य प्रणीत तीन मार्ग – पुष्टि मार्ग, मर्यादा मार्ग, प्रवाह मार्ग 42

(४) पुष्टिमार्ग का भक्ति पक्ष – 43

(५) पुष्टिमार्ग का ज्ञान पक्ष – 44

(१) परब्रह्म – अक्षर ब्रह्म 45

(२) जगत् – संसार 46

(३) जीव–शुद्ध जीव, संसारी जीव, मुक्त जीव 46

(४) माया 47

(५) आविर्भाव – तिरोभाव शक्ति 47

२. पुष्टि भक्ति का स्वरुप : 48

(१) पुष्टि भक्ति – प्रेमलक्षणा भक्ति 48

(२) शुद्ध पुष्टि – विशुद्ध प्रेम – गोपियाँ 48
(ब्रजांगनाएँ, गोप कुमारिकाएँ, गोपांगनाएँ)

(३) वात्सल्य भाव भक्ति – ब्रजांगनाएँ 48

(४) स्वकीया (पत्नी) भाव भक्ति – गोप कुमारिकाएँ 48

(५) परकीया (प्रेयसी) भाव भक्ति – गोपांगनाएँ 49

(६) नवधा भक्ति 49

(७) वल्लभाचार्य की भक्ति के प्रकार – मर्यादा भक्ति, पुष्टि भक्ति 50

३. **पुष्टिमार्ग की शरण दीक्षाएँ :** 50

(१) समर्पण (आत्म निवेदन) अर्थात् ब्रह्म सम्बन्ध 50

(२) समर्पण मंत्र – (१) गद्य मंत्र, (२) अष्टाक्षर मंत्र 51

(३) समर्पण मंत्र की विधि 51

(४) समर्पण व दान में अन्तर 52

४. **पुष्टिमार्गीय सेवा :** 52

(१) सेवा व पूजा में अन्तर 52

(२) पुष्टिमार्गीय सेवा के प्रकार – 53

(१) क्रियात्मक सेवा – तनुजा, वित्तजा

(२) भावनात्मक सेवा – मानसी

(३) पुष्टिमार्गीय सेवा का क्रम – 53

(१) नित्योत्सव सेवा

(२) वर्षोत्सव सेवा

५. **पुष्टिमार्ग के सेव्य स्वरुप :** 53

मुख्य ग्यारह सेव्य स्वरुप हैं। 54

६. **पुष्टिमार्गीय आचार्यों की बैठकें :** 55

(१) वल्लभाचार्य की चौरासी बैठकें 55

(२) विठ्ठलनाथ जी की अट्ठाइस बैठकें 55

(३) गिरिधरलाल जी की चार बैठकें 55

(४) गोकुलनाथ जी़ की तेरह बैठकें 55

(५) हरिराय जी की सात बैठकें 55

(६) गोवर्धन नाथ जी की तीन बैठकें 55

(७) दामोदर जी की तीन बैठकें 55

७. **पुष्टिमार्ग का ललित कलाओं में योगदान :** 56

१. चित्रकला – 56

(१) चित्रकला का संक्षिप्त परिचय 56

(२) पुष्टिमार्गीय चित्रकला के प्रकार – पिछवाई कला, भिति चित्रकला 58

(३) नाथद्वारा के प्रमुख चित्रकार 60

(४) चित्रकारी की साधन – सामग्री – ब्रश, तुलिका, रंग 61

२. **सांझी कला –** 62

(१) सांझी कला का परिचय 62

(२) सांझी बनाने की रीत 62

(३) पुष्टिमार्ग में सांझी का महत्व 63

३. **छठी अंकन –** 64

(१) छठी पूजा का परिचय 64

(२) पुष्टिमार्ग में छठी का उत्सव व विधि (या रीत) 64

४. **पुष्प कला –** 64

(१) पुष्प कला का आरम्भिक परिचय 64

(२) पुष्टिमार्ग में पुष्पकला 65

५. **पाक कला –** 66

(१) पुष्टिमार्गीय पाक कला का विस्तृत विवरण – 66

सखड़ी प्रसाद, अनसखड़ी प्रसाद

८. **पुष्टिमार्ग के पर्वोत्सव :** 68

(१) नित्योत्सव व वर्षोत्सव 68

(२) वर्षभर के मुख्य उत्सवों की सूची 69

९. **पुष्टिमार्ग और ब्रज तथा ब्रज यात्रा :** 75

(१) ब्रज – पुष्टिमार्गीय परिचय 75

(२) ब्रज यात्रा – 79

(१) ब्रज यात्रा परिचय 79

(२) पुष्टिमार्गीय ब्रज यात्रा का परिचय 79

(३) पुष्टिमार्गीय ब्रज यात्रा की विधि 80

(४) पुष्टिमार्गीय ब्रज यात्रा के स्थान 82

१०. **पुष्टिमार्ग में राधा का महत्व :** 90

(१) राधा का परिचय व महत्व 90

(२) पुष्टिमार्ग में राधा का स्थान 91

११. **पुष्टिमार्ग में यमुनाजी का महत्व :** 92

१२. **पुष्टिमार्ग में गिरिराज गोवर्धन का स्वरुप :** 98

१३. **पुष्टिमार्ग में रास लीला का स्वरुप :** 103

(१) रास लीला का परिचय 103

(२) रास लीला की व्याख्या 103

(३) रास लीला का आरम्भ और विकास 107

(४) रास लीला के तीन रुप – 109

नित्य रास, नैमित्तिक रास, अनुकरणात्मक रास

(५) रास लीला का वर्तमान रुप 110

१४. पुष्टिमार्ग में तिलक व तुलसी कण्ठी का महत्व : 112

(१) तिलक – परिचय व महत्व 112

(२) तुलसी कण्ठी – परिचय व महत्व 115

१५. पुष्टिमार्ग में लीला की अवधारणा : 116

(१) लीला का अर्थ व व्याख्या 116

(२) लीला के तीन भेद – 117

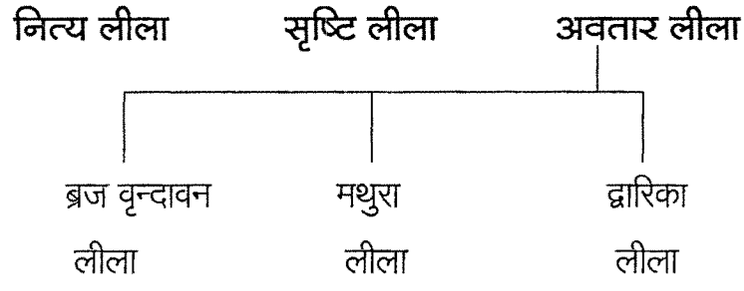

१६. पुष्टिमार्ग में भगवान श्री कृष्ण – श्री नाथ जी का स्वरुप : 121

(१) श्रीनाथ जी का प्राकट्य 122

(२) श्रीनाथ जी का स्वरुप 124

१७. पुष्टिमार्गीय देवालयों में प्रतिष्ठित सप्त ध्वजा जी : 126

(१) ध्वजा जी – परिचय व महत्व 126

(२) सात अंक का लगाव 127

(३) पुष्टिमार्ग की सप्तरंगी ध्वजा का वर्णन 128

(४) ध्वजा जी के तीन स्वरुप : आधि भौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक। 128

१८. पुष्टिमार्ग की प्राचीनता: 130

१९. भारतीय संस्कृति में पुष्टिमार्ग का स्थान : 131

(१) भारतीय संस्कृति में मध्यकालीन भारत – वल्लभाचार्य का समय 131

(२) समाज में पुष्टिमार्ग का स्थान 133

तृतीय अध्याय : पुष्टिमार्गीय कीर्तन साहित्य - प्रारम्भ और विस्तार 145

१. भारतीय संगीत : 145

(१) संगीत की भूमिका 145

(२) संगीत की परिभाषाएँ 145

(३) संगीत के आधार – नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, तान, सप्तक, वर्ण, अलंकार, पकड़, जाति, मेल या ठाट, राग । 147

(४) मानव जीवन में भक्ति संगीत 150

(५) संगीत का साहित्यिक इतिहास – कृष्ण काव्य के मुख्य भक्त कवि–जयदेव, विद्यापति, चंडीदास, नामदेव, नरसिंह महेता, कबीर, गोपाल नायक, अमीर खुसरों। 152

२. पुष्टिमार्गीय कीर्तन संगीतः 156

(१) भक्ताचार्यों द्वारा संगीत का विकास – 156

स्वामी हरिदास , 158

हित हरिवंश , 159

चैतन्य महाप्रभु 161

(२) पुष्टिमार्ग में कीर्तन का आरम्भ 163

(३) पुष्टिमार्ग में कीर्तन की महिमा 163

(४) पुष्टिमार्गीय सेवा में कीर्तन गान का क्रम– 165

(१) नित्य कीर्तन सेवा का क्रम

(२) वर्षोत्सव कीर्तन सेवा का क्रम

(५) कीर्तन में प्रयुक्त राग – रागिनियाँ 168

(६) अष्टछाप द्वारा प्रयुक्त राग – रागिनियाँ 169

(७) अष्टछाप के समय के संगीतोपयोगी वाद्य – 173

(१) वाद्य के प्रकार – तत् वाद्य, सुषिर वाद्य, आनद्ध वाद्य, धन वाद्य 173

(२) मुख्य वाद्यों के नाम 174

(८) पुष्टिमार्गीय कीर्तन में प्रयुक्त गायन शैली 175

(१) ध्रुपद–घमार गायन शैली 176

(२) हवेली संगीत 178

(९) पुष्टिमार्ग के अन्य कीर्तनकार भक्त 180

(१०) कृष्ण भक्ति काव्य साहित्य में कीर्तन संगीत का स्थान 182

(११) पुष्टिमार्गीय कीर्तन की मुख्य पुस्तकें तथा उनका विवरण 184

(१) वर्षोत्सव के पद (भाग–१) 184

जन्माष्टमी से रास पर्यन्त

(२) वर्षोत्सव के पद (भाग–२) 186

धन तेरस से राखी पर्यन्त

(३) नित्य के पद (भाग–३) 192

(४) वसंत, घमार, होली, रसिया के पद (भाग–४) 197

चतुर्थ अध्याय : पुष्टिमार्गीय साहित्य 208

९. मुख्य पुष्टिमार्गीय गद्य साहित्य 208

(१) वार्ता साहित्य – 208

(१) वार्ता शब्द की व्याख्या 208

(२) वार्ता साहित्य का आरम्भ 208

(३) पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य का हिन्दी साहित्य में स्थान 210

(४) वार्ता साहित्य की भाषा – ब्रज भाषा 211

(५) पुष्टिमार्ग में वार्ता का महत्व 212

(६) पुष्टिमार्गीय वार्ता के प्रकार – 213

प्रसंगात्मक, संख्यात्मक, भावनात्मक

(७) वार्ता साहित्य का वर्गीकरण – 213

(१) साम्प्रदायिक व धार्मिक दृष्टि से 213

(२) ऐतिहासिक दृष्टि से 215

(३) सामाजिक दृष्टि से 216

(४) साहित्यिक दृष्टि से 216

(८) मुख्य वार्ता ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय – 216

(१) चौरासी वैष्णवन की वार्ता 216

(२) दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता 217

(३) निज वार्ता, धरु वार्ता, बैठक चरित्र 217

(४) महाप्रभु वल्लभाचार्य की प्राकट्य वार्ता 217

(५) भाव सिन्धु की वार्ता 217

(६) श्री नाथ जी की प्राकट्य वार्ता 217

(७) अष्टसखान की वार्ता 217

(२) भावना साहित्य 218

(३) वचनामृत साहित्य 219

(४) अन्य गद्य साहित्य 219

(५) नई खोज से प्राप्त मुख्य पुष्टिमार्गीय ब्रज भाषा के गद्य ग्रन्थ की सूची 220

२. पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य : 221

(१) पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य – सामान्य विवरण 221

(२) पुष्टिमार्गीय मुख्य भक्त कवियों की तालिका – 221

(१) अष्टछाप कवियों के नाम 221

(२) गोस्वामी आचार्य गण के नाम 221

(३) गोस्वामी स्त्री वर्ग के नाम 222

पंचम अध्याय : पुष्टिमार्ग के प्रमुख रचनाकारों का परिचयात्मक विवरण 225

१. पुष्टिमार्ग के गोस्वामी आचार्य वर्ग 225

(१) वल्लभाचार्य 225

(२) गोपीनाथ जी 225

(३) गुसाँई विठ्ठलनाथ जी 226

(४) गोकुलनाथ जी 230

(५) हरिराय जी 233

२. **पुष्टिमार्ग के भक्त कवि – अष्टछाप** 235

(१) कुम्भनदास 236

(२) सूरदास 239

(३) परमानंददास 242

(४) कृष्णदास 244

(५) गोविन्ददास 246

(६) नंददास 247

(७) चतुर्भुजदास 248

(८) छीतस्वामी 249

(९) अष्टछाप का महत्व 249

षष्ठ अध्याय : पुष्टिमार्गीय हिन्दी कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन 255

१. **पुष्टिमार्गीय मुख्य हिन्दी गद्य कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन :** 255

(१) पुष्टिमार्गीय मुख्य हिन्दी गद्य कृति – 255

वार्ता साहित्य का साहित्यिक मूल्यांकन

(२) ब्रज भाषा हिन्दी का साहित्यिक मूल्यांकन 256

२. **पुष्टिमार्गीय मुख्य हिन्दी पद्य कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन :** 258

(१) पुष्टिमार्गीय मुख्य हिन्दी पद्य कृति – 258

अष्टछाप काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन (जिसमें भाषा शैली, रस, काव्य परम्परा आदि का विवरण है।)

(२) संक्षेप में अष्टछाप के कवियों की मुख्य कृतियों का साहित्यिक विवरण– 262

(१) सूरदास 262

(२) परमानंद दास 266

(३) कुम्भनदास 268

(४) नंददास 270

(५) गोविन्ददास 272

(६) कृष्ण दास 273

(७) छीतस्वामी 275

(८) चतुर्भुजदास 276

सप्तम अध्याय : उपसंहार 279

उपसंहार में मैंने अपने शोध–अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। साथ ही मुझे सहायता व सहयोग करने वाले महानुभावों का आभार व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची 295